सामाजिक असमानता की उपभोक्ता मुस्लिम महिलाओं की त्रासदी : 'अकेला पलाश'

प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा
सहायक प्राध्यापक तथा शोध निर्देशक
हिंदी विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय , मुखेड
त.मुखेड जि.नांदेड (महाराष्ट्र)

साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है । साहित्य से समाज को काफी परिवर्तन करने में मदत मिलती है । पूरे समाज का साहित्य के माध्यम से चिरपरिचय मिलने लगता है । वर्तमान समय में साहित्य ही एक मात्र ऐसा क्षेत्र है जिसे सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक और अन्य सभी क्षेत्र के लोग डरने लगते है । समाज की वास्तविकता का चित्रण ही सुधार की दृष्टी से पहला कदम हो सकता है । हिंदी साहित्य इन सभी परिस्थिति से अलग भाषा का साहित्य नहीं है । जिसके द्वारा अमीर - गरीब , स्त्री - पुरुष सभी के हर्ष , उल्हास और दुख , दर्द , पीड़ा को वाणी दी गयी है । आज के दौर का हिंदी साहित्य हजारों सवाल और जवाब लेकर खड़ा है । जिसके कारण अनेक विमर्शों का उदय होने लगा है । जिनमें स्त्री विमर्श , दलित विमर्श , आदिवासी विमर्श , किन्नर , अल्पसंख्याक विमर्श और वृध्द , किसान आदि विमर्शों का हम उल्लेख कर सकते है ।

स्त्री विमर्श पर लेखन करनेवाले अनेकों ने अपनी कलम चलायी है । परंतु एक स्त्री होकर स्त्री की समस्या का समाधान ढूँढने के लिए कलम उठानेवालों में मन्नू भंडारी , चित्रा मुद्गल , उषा प्रियंवदा , मंजुल भगल , राजी सेठ , मैत्रेयी पुष्पा , मेहरून्निसा परवेज , नासिरा शर्मा , शशिप्रभा शास्त्री , कृष्णा सोबती , सूर्यबाला , चंद्रकिरण सोनरेक्सा , मृदुला गर्ग, मालती जोशी , दीप्ति खण्डेलवाल , नमिता सिंह , मनिषा कुलश्रेष्ठ , क्षमा शर्मा , सुशीला टाकभौरे आदि का बहुत बड़ा योगदान है । जिन्होंने परंपरागत रुढी , प्रथा , परंपरा एवं अंधश्रद्धा के भय से घर की चार दिवारी में घुट घुटकर जिनेवाले नारी की चित्कार को साहित्य में स्थान दिलाने के लिए काफी संघर्ष करती रही है । वास्तव में नारी विषयक विचार प्रस्तुत संदर्भ में इस प्रकार है - " स्त्री की दशा में गिरावट आने का एक कारण स्त्री शिक्षा की उपेक्षा माना गया था । अनेक सामाजिक , आर्थिक कारणों से स्त्री को अशिक्षित ही रखा गया । ऐसा माना जाने लगा कि स्त्रियों को नौकरी तो करानी है नहीं , फिर पढ़ाने का क्या मतलब । शिक्षा के अभाव में स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं रह सकी । स्त्री के सारे अधिकार क्रमशः बिखेरते गये । और फलतः स्त्रियाँ अशिक्षित होने से अंधश्रध्दा और कुरीतियों में जकड़ती गयी । परिणाम यह हुआ कि स्त्रियों की स्थिति निम्न होती गयी । "[1] पुराने जमाने से आज तक नारी को बिना माँगे और संघर्ष किए कुछ नहीं मिला । हर समय अपने अस्तित्व की लडाई खुद के दम पर लडती रही है । इस लडाई में आशंका के कारण किसी और का सहारा लिया है तो वहाँ आधार के जगह पर छल , कपट , यातनायें झेलनी पड़ी है । आज हम इस आलेख में मेहरून्निसा परवेज का मुस्लिम महिलाओं के अन्याय - अत्याचार को व्यक्त करनेवाला प्रसिद्ध उपन्यास " अकेला पलाश " की दर्दभरी गाथा पर प्रकाश डालना चाहते है । नारी किसी भी जाति , धर्म , पंथ , वर्ग या समुदाय की रही हो । उसका इतिहास प्रगति की शिखर पर पहुँचा हुआ नहीं है । उसे इतिहास के पन्नों पर अपना नाम अंकित करने के लिए हजारों बार सवालों के कटघरे में खड़ा होना पड़ा है । तब जाकर कुछ ईनेगिने नामों को हम आदर्श मानते है । इन प्रमुख महिलाओं के साथ - साथ चूल्हा जलानेवाली महिला और ऑफिस में कामकाजी महिला अनेक पीड़ा को झेल चूँकि है । मुस्लिम समुदाय में भी इसी प्रकार महिलाओं पर काफी बंधन , डर , भय निर्माण किया गया है ।

"ईश्वरचंद विद्यासागर ने हालाँकि कभी भी धार्मिक शिक्षा नहीं दी किन्तु उन्होने अपनी कन्या पाठशालाओं में संस्कृत तथा बंगाली पढ़ाया । जाने - माने मुस्लिम विद्वान एवं मुस्लिम समाज सुधार आंदोलन के प्रणेता सैयद अहमद खान का कहना था कि मुस्लिम औरतों को तालीम जरुर हासील करनी चाहीए मगर घर में ।
उन्होने मुस्लिम लडकियों को ' अंग्रेजियत ' के खिलाफ आगाह किया । "[2] शिक्षा का प्रमाण अन्य समाज से अत्याधिक कम मात्रा में होने से यहाँ पर नारी चेतना का स्वर बहुत कम दिखायी देता है । लेकिन जितनी मुस्लिम महिलायें शिक्षित हुई है उतनी ही गलत रुढ़ी , प्रथा , पंपरा और पाखंडवाद का खंडन करने लगी है । मुस्लिम महिला की दर्दभरी चिखें बहिरे समाज तक पहुँचाने के लिए ही मेहरून्निसा परवेज "अकेला पलाश " जैसा उपन्यास लिखने का धैर्य एवं साहसपूर्ण कार्य कियाहै।

" अकेला पलाश " की नायिका तहमीना अनमेल विवाह का शिकार हुई है । जिसको बचपन से लेकर सुकून का एक बूँद भी नहीं मिला । उस सुख की तलाश जिन्दगीभर वह करती रही है । नारी के देह से लेकर उसके रुह तक का सफरनामा इस उपन्यास की मूल संवेदना है । माँ के भय , चिंता के कारण तहमीना अनमेल विवाह जमशेद से करती है । जो व्यक्ति न उसका हम उम्र है या अन्य किसी बातों में समान है । दोनों की जोड़ी बेमेल है । फिर भी तहमीना दोनों के बिच प्रेम के बीज अंकुरित करने का भरकस यत्न करती है । वहाँ पर भी उसे अपमानीत , कुंठित होना पड़ा है । पति जमशेद की नपुंसकता पर उसे ऐतराज है । मात्र वह किसी गैरमर्द के बाँहों में जकड़ना नहीं चाहती । वह अपने पति से संतुष्टि पाना चाहती है । उस पति से घोर निराशा मिलती है । ऐसे अवस्था में भेड की तरह तुषार जैसे व्यक्ती लाभ उठाना चाहते है । " जिसके पास आज अपना गाडी , बँगला , फ्रिज , वें सारीं चीजें है , जिनके लिए वह कल तरसती थी , सपने सँजोये थे । आज इतने वर्षों बाद तुषार का पत्र पाकर उसकी ईच्छा हुई कि , मुड़कर एक बार फिर पुरानी तहमीना को निहारे , जो कच्ची धरती पर खड़ी व्याकुल - सी आगे के रास्ते को निहारती थी ।... "[3] तहमीना पुरुष के आँखों का छल , कपट बखुबी नाप लेती है । जिसके कारण वह किसी के चँगुल में स्वयं और अपने जैसी किसी लडकियों को फँसने नहीं देती । जिनमें रज़िया , मिनाक्षी जैसे लडकियों के विभिन्न प्रसंगों का वर्णन मिलता है । समय से पहले उन्हें सचेत कर देती है । " मत रो रजिया , मेरी बात को अकेले में सोचो और उस पर अमल करों । क्या फायदा , विनोद की पत्नी इधर - उधर बकती है , तुम्हें बदनाम करती है , पति से लडती है । तुम्हें अब यहाँ रखना भी ठीक नहीं है । इसलिए मैने तुम्हारा ट्रांसफर कर दिया है , और तुम कल ही यहाँ से चली जाओं और काम में अपना मन लगाओं । "[4] सामाजिक असमानता का शिकार मुस्लिम महिला कैसे हुई है ? उनपर अपने ही भरोसेमंद रहनेवालों ने कैसे धोखादडी की है ? नारी को अज्ञानी रखकर अँधेरी काल कोठरी में बंदिवान बनाकर कैसे रखा गया है ? घरके दहलीज को लाँघनेवाली औरत को बदचलन , बेहया या आवारा जैसे शब्दों से अपमानीत करते रहे है । गैरमर्द के साथ

हँसकर बात करने से भी जमशेद को अप्रिय लगता है । इसके लिए खुलकर अपने पत्नी को टोककर रोक लगाना चाहता है । नारी पर केवल पति का अधिकार है । उसके मत को कोई कीमत नहीं है । लडकी सयानी हो जाने के बाद तहमीना के माँ के मन में डर और भय है । क्योंकि समाज के किसी भेडिये की नजर उसकी बेटी पर न पड जाए । इसीलिए हमेशा वह बेटी को आँखों से ओझल होने नहीं देती । पति के हम उम्र के साथ जवान बेटी का ब्याह करने से क्षणभर के लिए माँ सारे बंधनों से निजात होकर अजातशत्रू की तरह महसूस करती है । स्वयं को होनेवाली पीड़ा बेटी के जीवन में न आये इसके लिए चिंतित माँ का यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया गया है।

तहमीना आधुनिक विचारधारा को लेकर जीनेवाली स्त्री है । भले ही उसका विवाह अधेड उम्र के जमशेद से हुआ हो तब भी परिस्थिती को समझकर एक नई दुनिया बसाने का लाख प्रयास वह करती है । परंतु जमशेद का क्रोधीत होना पुरुष के डर , भय , कमजोरी को दर्शाता है । जब भी पुरुष के हाथ से परिस्थिति बाहर हो जाती है तब वह क्रोधीत हो जाता है । या समय - समय पर अपनी पत्नी को दूसरों के आगे कम दिखाने का प्रयास करता है ।

जिससे पुरुषप्रधान समाज के दिल को क्षणभर के लिए सुकून मिल जाता है । तहमीना की वेदना सारे शरीर से लेकर मन मस्तिष्क तक कराहने की है । इसके कारण तहमीना स्वयं के अस्तित्व की तलाश में है । प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से एक विशिष्ट समुदाय के नारी पर किया हुआ अन्याय - अत्याचार नहीं है । बल्कि समग्र नारी जाति पर यथाकाल शारीरिक और मानसिक अत्याचार हुआ है । जैसे पिढी लिखी नर्स के साथ डॉक्टर और संन्यासी बनने के लिए निकली विमला पर अत्याचार करनेवाली घटनायें नारी सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित करते है ।

नारी के पास पंचेंद्रिय के साथ - साथ एक छठा इंद्रिय यह भी होता है । जो समय से पहले नारी उस परिस्थिति को बहुत अच्छी तरह से समझती और महसूस करती है । सचेत नारी किसी के हाथ में नहीं आती । सारे समाज में डॉक्टर खन्ना , जमशेद , स्वामीजी , विनोद , तहमीना का पिता , ग्रामसेवक जैसे पुरुष होते है । जो सदैव अपने स्वार्थ का विचार कर - कर दूसरों के साथ छल , कपट , धोखादडी करने पर तुले होते है । जहाँ बुराई अधिक मात्रा में है वहाँ कुछ विपुल जैसे लोक भी अच्छाई के परिचायक होते है ।

मुस्लिम महिला को कुराण , अल्लाह , मजहब के नाम से डराया , धमकाया जाता है । जिससे उनका जीवन नारकीय यातनाओं से भरा है । अशिक्षा का प्रमाण मुस्लिम समाज में अत्याधिक कम प्रमाण में है । अगर तसलिमा नसरीन , मेरुन्निसा परवेज जैसे और भी महिला पढ़ - लिखकर आगे आ जाती । तो आज मुस्लिम महिला की यह दुर्गति नहीं होती । तहमीना की माँ हर समय भयग्रस्त है । ऐसी कितनी स्त्रियाँ है जो अपने पति के द्वारा दिये जानेवाले तलाक के डर को पीछे छोडकर आगे आते है । हर समय भय से आतंकित अवस्था में मुस्लिम महिला जीने लगती है । तलाक यह शब्द स्त्री की अपेक्षा पुरुष को सचेत करने के लिए था । परंतु नारी की अशिक्षा , अविवेकशिलता उसे दर - दर की ठोकरे खाने के लिए तलाक का डर जहन में बिठाया गया है । भारतीय समाज में माँ अपनी बेटी को शादी से बिदा करते समय में यह कहती है कि , " बेटी माँ के घर से डोली जा रही है तो ससुराल से अरथी निकलनी चाहिए । अन्यथा महकेवालों के मुँह को कालिख पोथने की बात होती है ।

" इसी मनोवृत्ती के कारण असंख्य महिलाओं का शिकार किया जाता है।

भारत देश के इतिहास में जो जो महिला परिस्थिति को समझकर आगे बढने का साहस दिखाया उसमें वह सफल रही है । जो नारी डरकर , लोकलाज की बात को लेकर घर की चौखट को लांघना अयोग्य समझा उसकी अवस्था पशू से बदतर बनायी गयी है । इस उपन्यास में लेखिका तहमीना जैसे पात्र का निर्माण कर - कर अन्य अभावग्रस्त , बेसहारा को सहारा देने के लिए खडी करती है । इस उपन्यास का शीर्षक ही तहमीना की तरह जीवन जीनेवाली नारी की अवस्था उस पलाश के फूल की तरह होता है । जो उपर तो लुभावना दिखता है । उसका केसरिया रंग हर किसी को मोहीत कर देता है । वास्तव में उस फुल से न कोई गमला बनाया जाता , न स्त्री अपने बालों में लगा सकती है । जिस पेड पर फूल मनमोहक बनकर खिलता है , उसी पेड पर आखिरकार मुरझा जाता है । नारी की स्थिती इस पलाश के फूल से बढकर और कोई नहीं है । समाज में नारी भले ही खुला विचरण करने लगी है । लेकिन आज भी उसे उसी स्थान पर रखने का काफी प्रबंध करने की मानसिकता हमारे समाज में आज भी जीवित है ।

लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं के नारकीय जीवन को त्यागकर उन्हें खुले आसमान में उडनेवाले पंछियों की तरह आजादी दिलाना चाहती है । आजादी के समय में कई महिलायें सचेत होकर स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया था । आज के दौर में ऐसे साहित्य को पढ़कर समाज सुधार का प्रण उठानेवाली नारी आगे आने की अपेक्षा लेखिका करती है । नारी उत्थान से देश की आधी आबादी जो व्यवस्था से बाहर है । उसे हम साथ लेकर चलने से आनेवाले दिनों में मेरा भारत देश विकास के परमोच्च शिखर पर जरुर पहुँच सकता है । जिसके लिए पक्का मनोबल , शौर्य , साहस और वीरता का हौसला बुलंद होना आवश्यक है । सामाजिक असमानता को छेद देकर समता का परचम लहराना है । उस समय मुस्लिम महिलाओं की होनेवाली दुर्गति को हम रोक सकते है । नारी मुक्ति के आंदोलन के बजाय स्त्री - पुरुष के मन का भेद मिटाने से सब ओर कुशल मंगल का वातावरण आनेवाले दिनों में निश्चित रुप से बन सकता है । उस समय सामाजिक सरोकार की परिभाषा सार्थक बन सकती है।

****

संदर्भ ग्रंथ :-

1) भारत में सामाजिक व्यवस्था - डॉ. कल्याणी आर.भट्ट पृ.क्र.133
2) स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800 - 1990) - राधा कुमार पृ.क्र.50
3) अकेला फलाश - मेहरुन्निसा परवेज
4) वहीं
5) साठोत्तरी महिला कहानीकार - डा.मंजु शर्मा
6) भारतीय साहित्य - डॉ. शशि पंजाबी